युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पांचवीं पुण्यतिथि समारोह

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 16 सितम्बर। युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पांचवीं पुण्यतिथि के अवसर पर साप्ताहिक श्रद्धांजलि कार्यक्रम में '**जल है तो कल है**' विषय पर बोलते हुए संगोष्ठी के मुख्य वक्ता भारत सरकार के केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री मा0 गजेन्द्र सिंह शेखावत जी ने कहा कि नये भारत का आधारशिला बनेगा जल। जब कोई विषय जन की इच्छा बन जाती है। तो वह विषय निश्चित रूप से सफल होगा। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन का संकट पूरे दुनिया खासकर भारत पर दिखाई दे रहा है। इस संकट से निपटने के लिए मात्र सरकार द्वारा किये गये प्रयास पर्याप्त नहीं होंगे। जनता को आगे आकर इसमें सहयोग करना पड़ेगा। हम सुबह–स्नान करते है तो सभी नदियों को का स्मरण करते है। दुनिया की सभी सभ्यताएं नदी के तट पर विकसित हुई। परन्तु यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि आज वही हमारी नदी संकट में है। हमारे संस्कृति में जल को जगदीश माना गया है। ऋग्वेद में जल एवं पर्यावरण संरक्षण विषय पर पर्याप्त उदाहरण है। सभी भारतीय ग्रंथो में जल को ईश्वर माना गया है। दुनिया में जितना जल है उसका 97.3 प्रतिशत जल समुद्र का खारा जल है, जो हमारे उपयोग में नही आता है परन्तु वर्तमान टेक्नोलॉजी से उस जल को भी उपयोग में लाने का प्रयास किया जा रहा है। सबसे अधिक जल पृथ्वी के भू–भाग में है। हमारा जीवन 65 प्रतिशत भूगर्भ जल पर निर्भर है। जितना जल हम जमीन से लेते हैं उसके अपेक्षा बहुत कम जल हम भूगर्भ में भेज पाते हैं। भारत में जल का इतना बड़ा संसाधन होते हुए भी आने वाले समय में 60 करोड़ आबादी को पीने के पानी का संकट होगा। इजरायल का जिक्र करते हुए उन्होनें कहा कि इजरायल का दो तिहाई हिस्सा रेगिस्तान है। परन्तु वाटर हारवेस्टिंग तथा जल का पूर्ण रूप से प्रयोग करके एवं ड्रॉप सिचाई के माध्यम का प्रयोग करके आज इजरायल का रेगिस्तानी हिस्सा सब्जी उत्पादन का बड़ा केन्द्र बना है और सब्जियों तथा पीने के पानी का निर्यात किया है। सिंगापुर में गटर के पानी को रि–साईकिल करके पीने के प्रयोग में लाया जाता है। प्रकृति ने हमें सभी देशो से अलग किया। यदि हम सही तरीके से प्रबंधन करें तो जल संकट को टाला जा सकता है। मोदी जी के प्रयास से जो ड्राइ ब्लाक हैं उन ब्लो का मैपिंग करके भूगर्भ जल के स्तर को बढ़ाने की योजना का कार्य हो रहा है। नहाने में, दाढ़ी बनाने में, कपड़ा धोने में यदि हम जल संरक्षण करें तो काफी हद तक मदद हो सकती है। फर्म में पानी बचाने के साथ–साथ खेतो में भी पानी कैसे बचे इसकी भी चिंता करें। ऐसे फसलों को बोयें जिसमें कम पानी लगता है तो खेती में प्रयोग होने वाले 5 प्रतिशत पानी को बचा सकते है। हरियाणा में धान के स्थान पर मक्के की खेती पर सरकार जोर दे रही है। भारत सरकार शहर के गन्दे पानी को तथा भूगर्भ जल को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित किया है। पानी को उपचारित करके जमीन में समाहित करने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। महाराष्ट्र में 80 प्रतिशत जल गन्ना की सिंचाई में प्रयोग होता है। वहां की सरकार ने जल संरक्षण के लिए गन्ने के खेतों में ड्रीप सिंचाई अनिवार्य कर दी है। सन्तो के नेतृत्वों में जल समस्या का समाधान हो सकता है। संत समाज को जल संरक्षण के लिए आगे आकर काम करना होगा। सरकार तो अपना प्रयास कर रही है लेकिन जबतक आम जनमानस की भावना इससे नहीं जुड़ेगी तबतक सफलता पूर्ण नहीं होगी।

विशिष्ट वक्ता उ0प्र0 के जल शक्ति मंत्री **श्री महेन्द्र कुमार सिंह** ने कहा कि प्रदेश सरकार अलग–अलग माध्यमों से जल संचयन करेगी और उसे कानून मे तबदील किया जायेगा। यू0पी0 सरकार अब ऐसे नियम बनाएगी कि चाहे कोई कालेज, कोई शैक्षणिक संस्था या व्यापारिक संस्थान हो, सभी को नेट वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम अपनी–अपनी संस्थाओं में लगाना जरूरी होगा। कैबिनेट मंत्री ने

कहा कि मान्यता देने से पहले यह सुनिश्चित किया जायेगा कि वहा पर रेट वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगा है या नहीं। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार से सभी सरकारी आफिसों में भी रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाना अनिवार्य किया जाएगा। अब जो भी निर्माण कराए जायेंगे उसका नक्शा तभी पास किया जाएगा जब वहा पर वाटर रिचार्ज सिस्टम बना होगा। उन्होंने कहा कि सरकार जब ऐसे प्रावधान करेगी कि कहीं से भी हम जितना पानी ले उतना ही पानी धरती के अंदर भी डाला जाए। उन्होंने कहा कि अब ऐसा एक्ट बनाया जाएगा जिसमें यह प्रावधान होगा कि कोई भी इण्डस्ट्रीज यदि पाइप से गंदा पानी या प्रदूषित पानी नदी के अंदर डाल रहा हो तो उसे 5 से 10 लाख रूपये जुर्माना और 5 से 7 साल की कड़ी सजा की व्यवस्था की जाए। डॉ0 सिंह ने कहा कि अब पानी से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। ऐसे सभी एक्ट को लागू करके अगली बारिश से पहले जल संचय जल संवर्धन के लिए बड़ा काम प्रदेश सरकार की ओर से किया जाएगा। उ0प्र0 सरकार जल के मुद्दे पर इतनी संवेदनशील है कि जल शक्ति का अलग से मंत्रालय बनाया गया है। जन सहयोग के माध्यम से हम निश्चित रूप से आने वाले जल संकट से निपटने में सक्षम होंगे।

मुख्य अतिथि नैमिषारण्य से पधारे **स्वामी विद्याचैतन्य** ने कहा कि सृष्टि की उत्पत्ति ही जल से हुई है और उसी जल से ही पृथ्वी पर जीवन की कल्पना साकार हुई है। वेदों में जल से मानव का माता–पुत्र का संबन्ध वर्णित हैं। जिस प्रकार से हम अपनी माता की हानि नहीं करते उसी प्रकार से जल का प्रदूषण भी हमें नहीं करना चाहिए। पांच तत्व से निर्मित शरीर मे जल का सबसे पहले महत्व है। हमारे शास्त्रो में नदियों को पाप नाशिनि व मोक्ष दायिनी कहा गया है। जैन धर्म में भी जल प्रदूषण को महापाप बताया गया है। शास्त्रों मे वर्णित है जल हमारे प्राणों की रक्षा करता है तथा माता की तरह पालन–पोषण करता है। जल औषधि गुणों से परिपूर्ण है। हमने नदियों को देवी स्वरूपा माता की संज्ञा दी है। सागर, नदीं, कुआ, वर्षा का जल इन सभी के संरक्षण का प्राविधान हमारे शास्त्रों में है। इसलिए अपने भविष्य को बचाये रखने के लिए जल का संरक्षण आवश्यक है।

विशिष्ट वक्ता मदन मोहन मालवीय प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय गोरखपुर के **प्रो0 गोविन्द पाण्डेय** ने कहा कि भारत में सर्वाधिक वर्षा होती है। वर्षा का जल संरक्षण करने की आवश्यकता है क्योंकि आने वाली समय में पीने के पानी का भी संकट होने वाला है। पहले कह दिया जाता था कि पैसा पानी की तरह बहा रहें है अब ऐसा नहीं कहा जा सकता है क्योंकि पैसा पानी की तरह नहीं बहाया जा सकता, पानी की कीमत पैसों से कहीं अधिक है। सन् 2025 में हम भी जल संकट ग्रस्त देश की श्रेणी में आ जायेंगे। हमारे यहां 15 प्रतिशत जल बर्बाद हो जाता है। 100 लीटर आरो के पानी से 70 लीटर पानी बर्बाद होता है मात्र 30 लीटर पानी उपयोग में आता है। इस प्रकार से हमें रि–साइकलिंग करके इस पानी का पूर्ण उपयोग करने की आवश्यकता है।

अध्यक्षता एवं आभार ज्ञापन महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो0 उदय प्रताप सिंह तथा संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में वैदिक मंगलाचरण डॉ0 रंगनाथ त्रिपाठी, तथा गोरक्ष अष्टकपाठ पुनीष पाण्डेय द्वारा किया गया। नैमिषारण्य से पधारे स्वामी विद्याचैतन्य जी एवं मुख्य वक्ता भारत सरकार केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री मा0 गजेन्द्र सिंह शेखावत तथा उ0प्र0 सरकार जल शक्ति मंत्री डॉ0 महेन्द्र कुमार सिंह का उत्तरीय एवं स्मृति ग्रंथ के साथ देवीपाटन के महन्त मिथलेशनाथ जी ने स्वागत सम्मान किया। कार्यक्रम में महन्त सुरेशदास, कथावाचक स्वामी राघवाचार्य जी, स्वामी गोपालदास जी, महन्त राममिलनदास जी, महन्त शान्तिनाथ, योगी कमलनाथ, ब्रह्मचारी दासलाल जी, महन्त शत्रुध्नदास जी, पंचानन पुरी जी आदि लोग उपस्थित थे।